संजय गुप्ता पेश करते हैं।

# कछुआ कवच

भोकाल

○लेखक : संजय गुप्ता / ○परिकल्पना : विवेक मोहन / ○संपादक : मनीष गुप्ता / ○चित्रांकन : कदम स्टूडियो

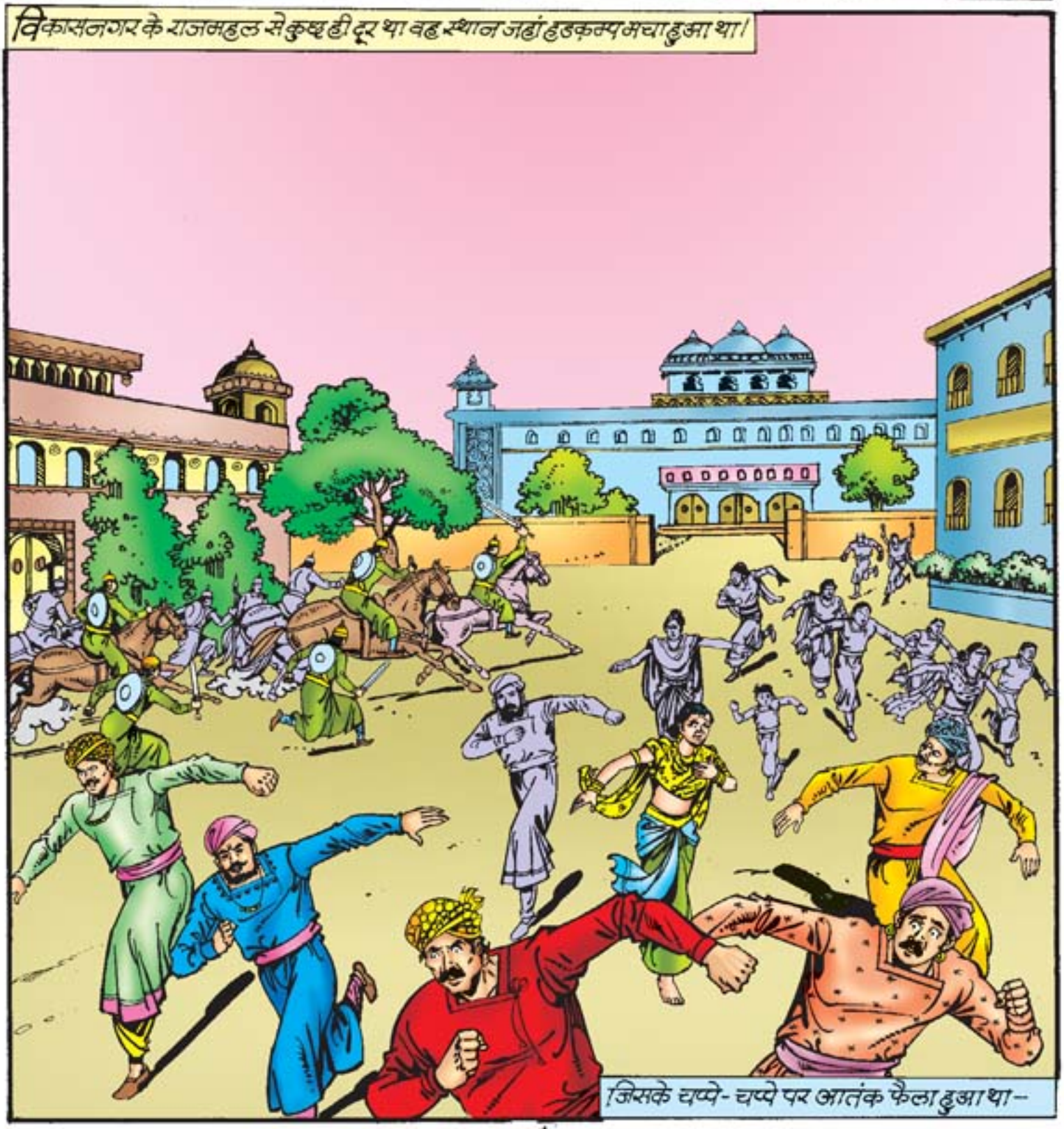

...और जहां नजर आ रहा था आंखों को फाड़ देने वाला वह दृश्य-
भड़ाक
चियांऽऽ
आह
ये यहां आया कहां से?
ओह! इतना बड़ा चूहा!
कहीं से भी आया हो, यह बहुत ही घातक है!

... इस पर आक्रमण करके इसे समाप्त कर...
...दो! ओह!
ओह!
आहह!
सभी ने एक साथ वार किया! और इसी के साथ सभी को पता चल गया कि उसे समाप्त करना मुश्किल था...

...और अगले ही पल उन्हें यह भी पता चल गया कि उसके हाथों अपने-आपको बचाना और भी कठिन था...
सड़ाक
आहह

...बहुत ही कठिन-
चियांऽऽ
आहह!

लेकिन यह विकासनगर था-
और विकासनगर में कठिन कार्य ही आसान होते हैं क्योंकि -

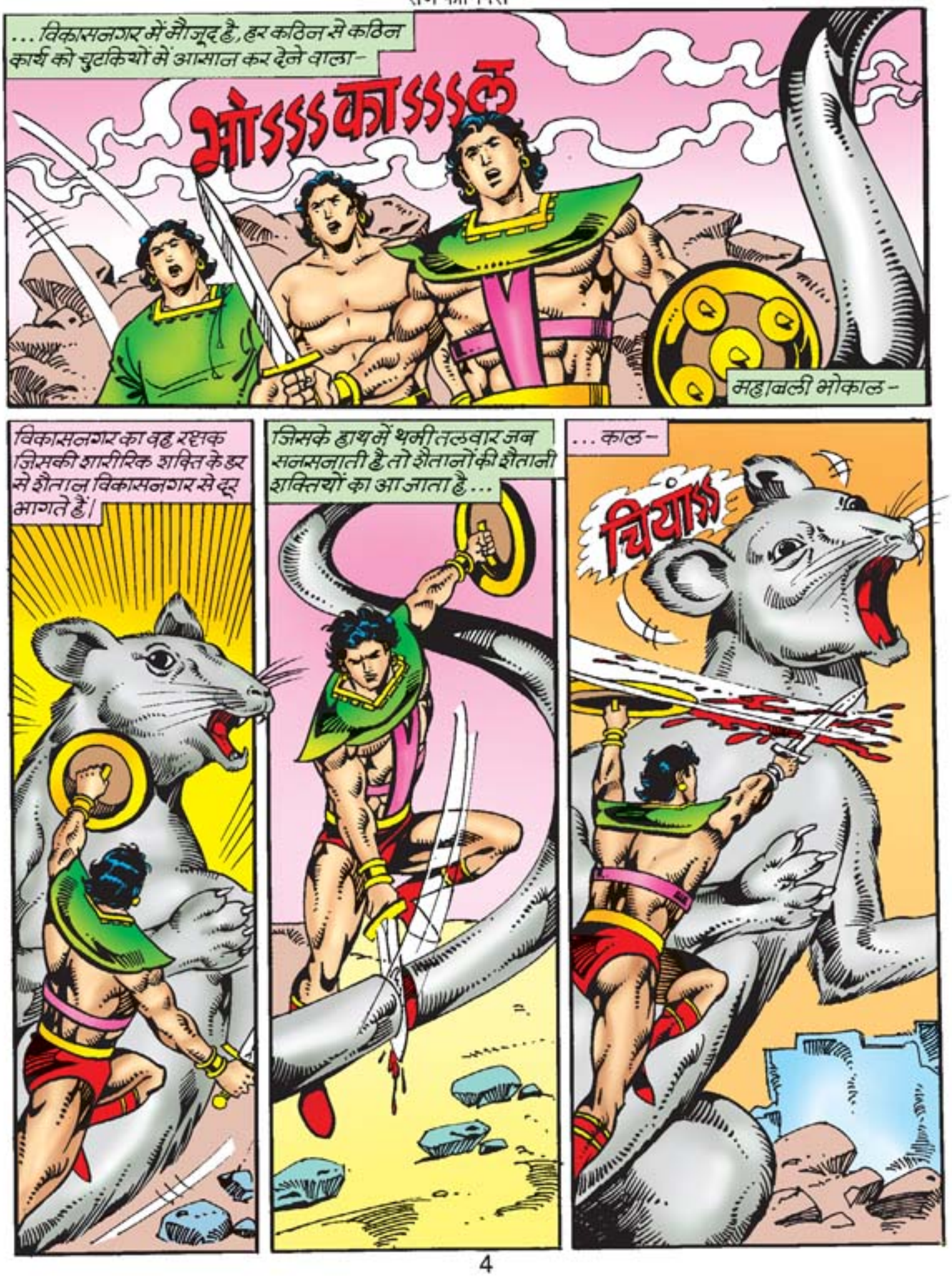
...विकासनगर में मौजूद है, हर कठिन से कठिन कार्य को चुटकियों में आसान कर देने वाला–
भोऽऽऽकाऽऽऽल
महाबली भोकाल–
विकासनगर का वह रक्षक जिसकी शारीरिक शक्ति के डर से शैतान विकासनगर से दूर भागते हैं।
जिसके हाथ में थमी तलवार जब सनसनाती है तो शैतानों की शैतानी शक्तियों का आ जाता है...
...काल–
चियांऽऽ

o इस विषय में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें कछुआ महल 

अब जब मैंने आजाद होने की सोची तो मैंने अपनी शक्तियों से चूहे को विशाल रूप प्रदान किया। और उसे भोकाल के हाथों समाप्त करा दिया।

अब शीघ्र ही भोकाल मेरे हाथों समाप्त होगा। परन्तु मैं ऐसा तभी कर सकता हूं जब मेरे पास अभेद्य ब्रह्माण्ड की किसी भी शक्ति से मात नहीं खाने वाला कछुआ कवच हो।

अपनी तंत्र शक्तियों से वातावरण में मौजूद पंचतत्वों को इकट्ठा करके अपना शरीर प्राप्त कर रहा था फूचांग–

मैं कछुआ कवच प्राप्त करूंगा। हर दशा में हासिल करूंगा।

लेकिन कछुआ कवच पंचतत्व के इस शरीर के बल पर नहीं पाया जा सकता।

इस शरीर को तो मुझे छोड़ना होगा।

भड़ाक

क्या होने जा रहा था यह किसी को मालूम नहीं था ना यहां...

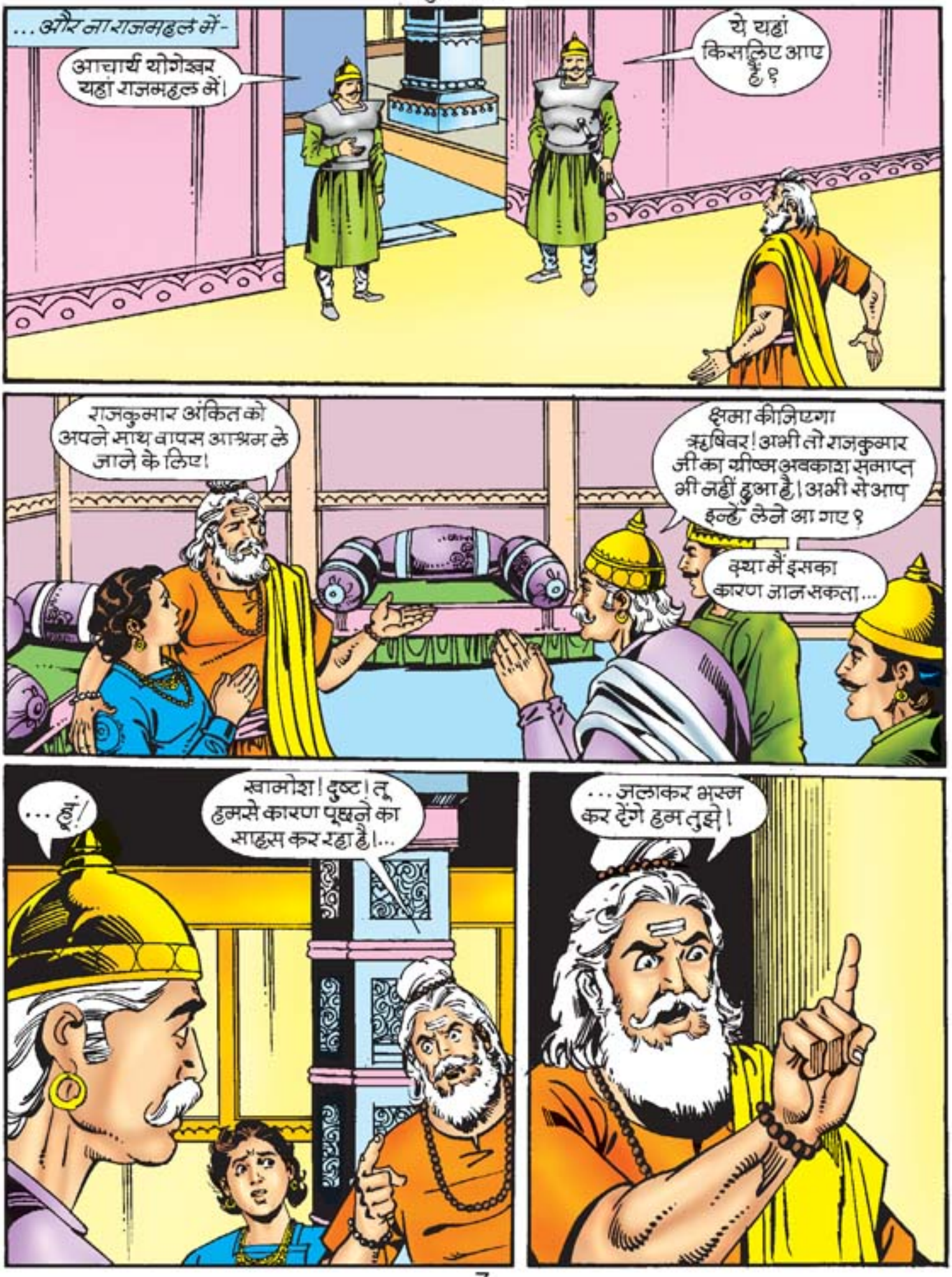
...और ना राजमहल में-
आचार्य योगेश्वर यहां राजमहल में।
ये यहां किसलिए आए हैं?
राजकुमार अंकित को अपने साथ वापस आश्रम ले जाने के लिए।
क्षमा कीजिएगा ऋषिवर! अभी तो राजकुमार जी का ग्रीष्म अवकाश समाप्त भी नहीं हुआ है। अभी से आप इन्हें लेने आ गए?
क्या मैं इसका कारण जान सकता...
...हूं!
स्वामीश! दुष्ट! तू हमसे कारण पूछने का साहस कर रहा है।...
...जलाकर भस्म कर देंगे हम तुझे।

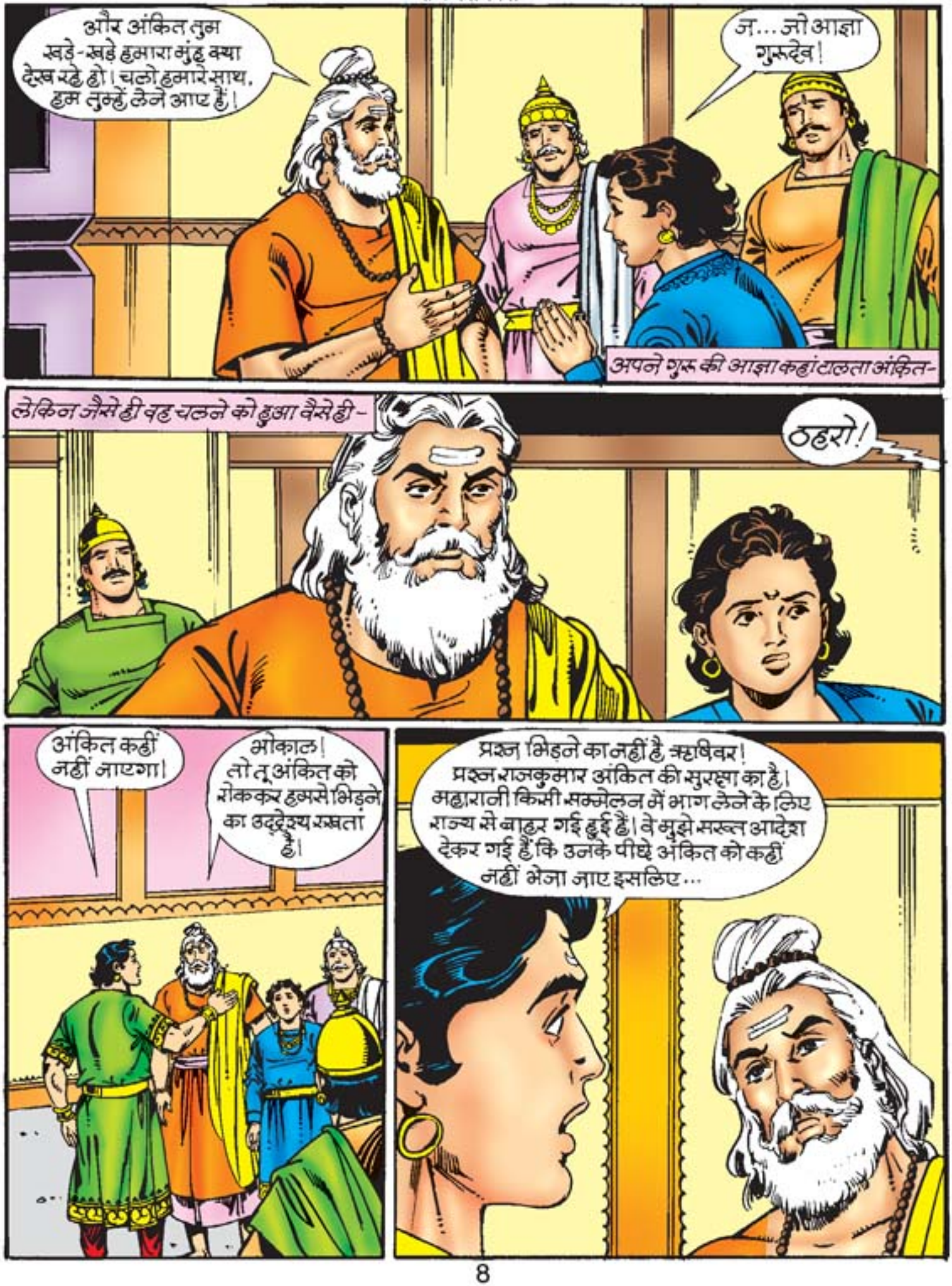
और अंकित तुम खड़े-खड़े हमारा मुंह क्या देख रहे हो। चलो हमारे साथ, हम तुम्हें लेने आए हैं।
ज...जो आज्ञा गुरुदेव!
अपने गुरु की आज्ञा कहां टालता अंकित-
लेकिन जैसे ही वह चलने को हुआ वैसे ही-
ठहरो!
अंकित कहीं नहीं जाएगा।
भोकाल! तो तू अंकित को रोककर हमसे भिड़ने का उद्देश्य रखता है।
प्रश्न भिड़ने का नहीं है, ऋषिवर! प्रश्न राजकुमार अंकित की सुरक्षा का है। महारानी किसी सम्मेलन में भाग लेने के लिए राज्य से बाहर गई हुई हैं। वे मुझे सख्त आदेश देकर गई हैं कि उनके पीछे अंकित को कहीं नहीं भेजा जाए इसलिए...

...जब तक महारानी जी वापस नहीं लौट आतीं तब तक अंकित कहीं नहीं जाएगा।
तू हमारा अपमान कर रहा है, भोकाल!

इसके लिए तुझे हमारे कोप का भाजन बनना पड़ सकता है!
राजकुमार अंकित की सुरक्षा के लिए मैं किसी भी स्थिति से निपटने को तैयार हूं।

आपके क्रोध से भी!
ओह!

योगेश्वर को अपना इरादा बदलना ही पड़ा -
चाहें तो हम तुझे इसी समय तेरी इस उद्दण्डता का दण्ड दे सकते हैं परन्तु हम तेरे मुंह लगकर अपना समय और शक्तियां व्यर्थ करना नहीं चाहते इसलिए इस समय हम अंकित को बिना लिए ही जा रहे हैं।

आने दे महारानी को तेरी इस उद्दण्डता का दण्ड हम तुझे उन्हीं से दिलाएंगे!
इस समय यहां से निकल जाने में ही मेरी भलाई है क्योंकि... इस समय भोकाल से भिड़ने का अर्थ है।...
...अपने बने बनाये खेल को बिगाड़ लेना।
लेकिन अंकित के बिना कछुआ कवच प्राप्त नहीं किया जा सकता। भोकाल ने उस कवच को रूद्र तालों की सुरक्षा में कहीं रखा हुआ है। और उन तिलिस्मी तालों को खोलकर या तो भोकाल कछुआ कवच तक पहुंच सकता है या अंकित।
भोकाल मेरी शक्तियों के शिकंजे में फंस जाएगा ये तो सोचना ही व्यर्थ है इसलिए मैंने अंकित को फंसाने की योजना बनाई है। लेकिन भोकाल ने मुझे पहले ही कदम पर मात देकर दिखा दिया है कि उसके होते मैं अंकित की परछाई को भी नहीं छू सकता।

ऐसा करने के लिए तो मुझे भोकाल को अंकित से दूर करना होगा।...
... और इसके लिए मुझे सहारा लेना होगा ...

... सूर्य शक्ति का।
फूचांग ने जो चाल चली थी –

भोकाल जल्दी ही उसमें फंसने जा रहा था –
अरे, ये आकाश से हुमारी तरफ दहकता सा गोला कैसा बढ़ रहा है, ?

ओह, कहीं ये कोई मुसीबत तो नहीं।

मुसीबत ही थी वह -
ओह नहीं! उससे जो किरणें छूट रही हैं वे हमारे घरों को जला रही हैं!
ओह! जहां वे किरणें गिर रही हैं वहां सब कुछ भस्म हो रहा है।
अब वह हमारी तरफ बढ़ रहा है।
ओह! वह हमें भी भस्म कर डालेगा!

बचना है तो भागो।
भागो!
भागे तो सभी लेकिन बचने वाला एक भी नहीं था क्योंकि...

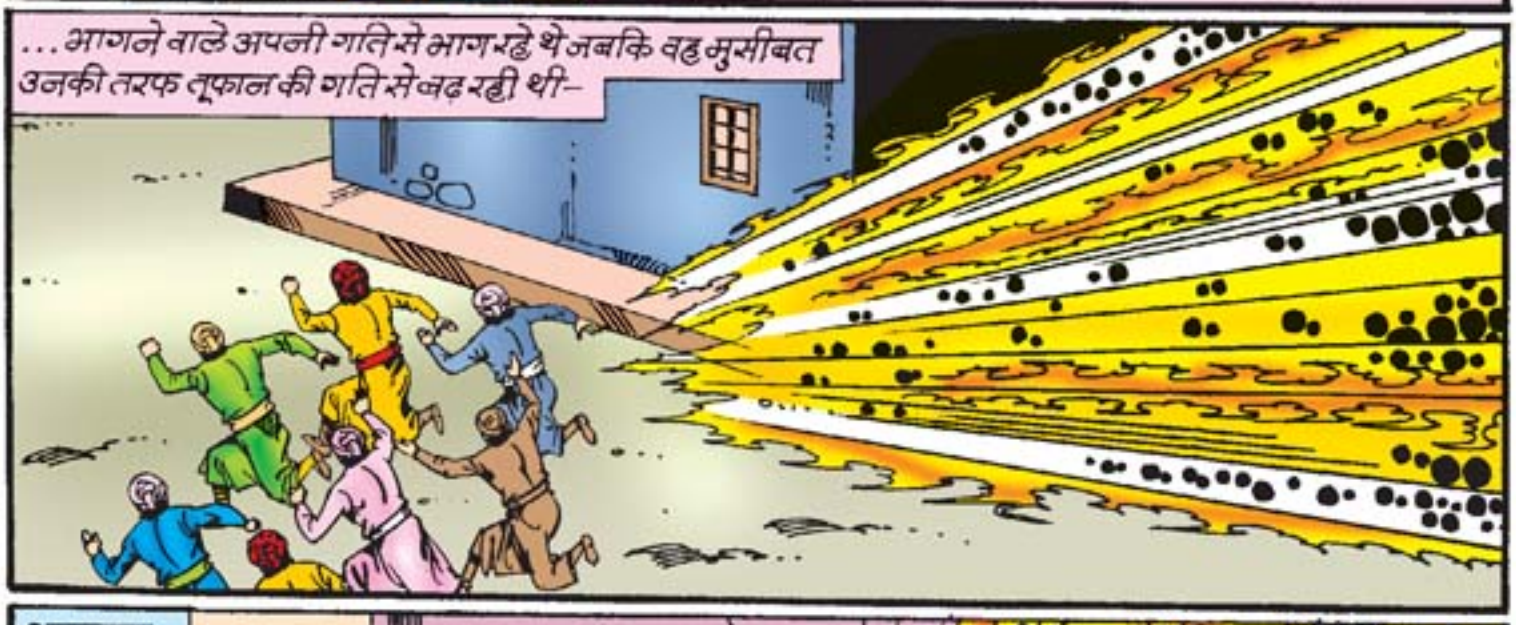
...भागने वाले अपनी गति से भाग रहे थे जबकि वह मुसीबत उनकी तरफ तूफान की गति से बढ़ रही थी–

अचानक–
लोगों को बचाने के लिए उस तूफान से टकरा गया वह पहाड़–

ओकाल नाम था उस पहाड़ का -
महागुरू ओकाल की शक्तियों का सहारा लेकर मैं यहां सही समय पर आ पहुंचा। एक क्षण की भी देरी हो गई होती तो सैकड़ों भस्म हो गए...
...होते। अरे, ये क्या हो रहा है ? वह गोला दो भागों में विभाजित हो रहा है।
और विभाजित हुए दोनों रूप अब विचित्र मानवाकृति धारण कर रहे हैं।
कैसे रूप हैं ये ?
तू हमें सूर्य योद्धा कह सकता है।

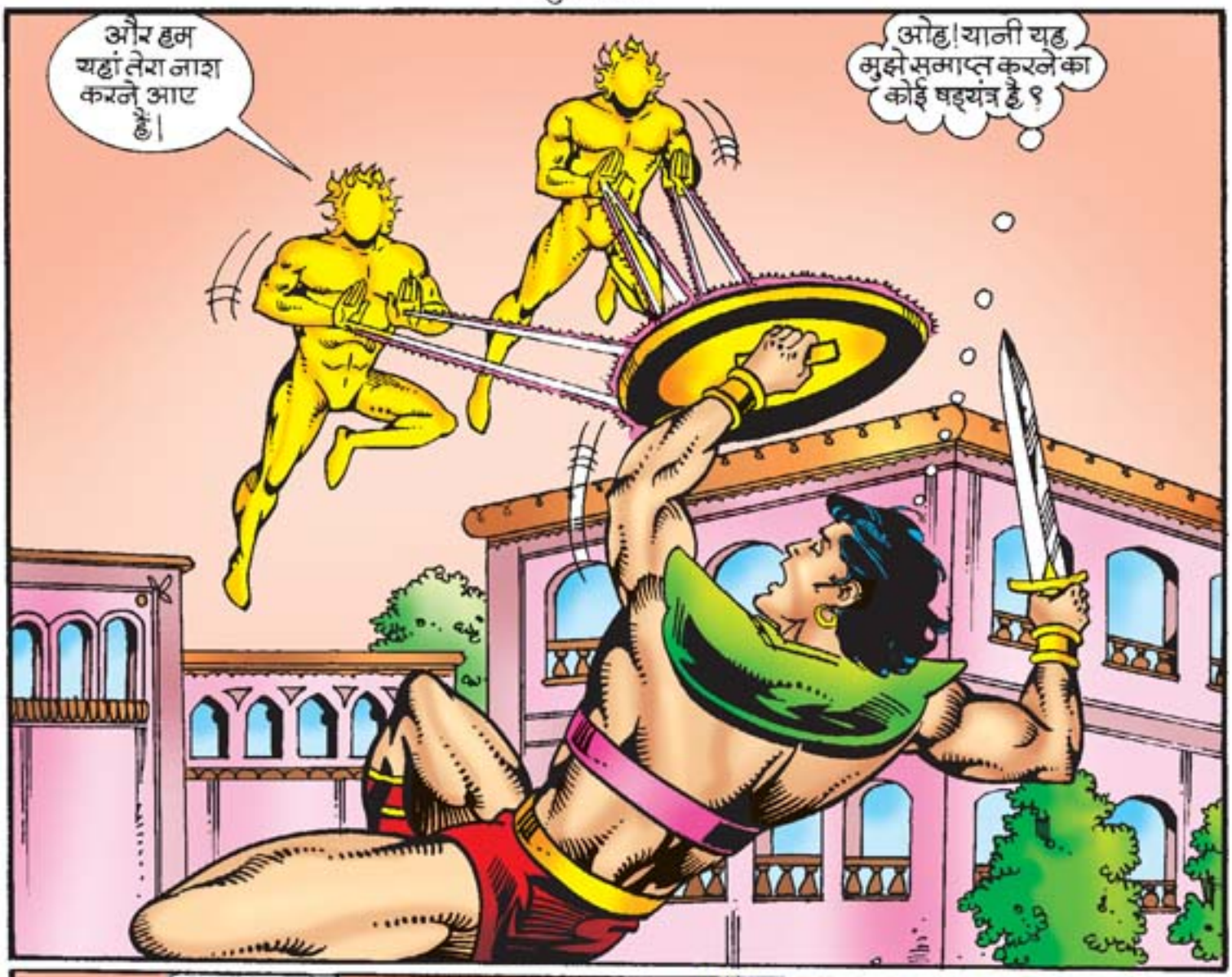
और हम यहां तेरा नाश करने आए हैं।
ओह! यानी यह मुझे समाप्त करने का कोई षड्यंत्र है ?

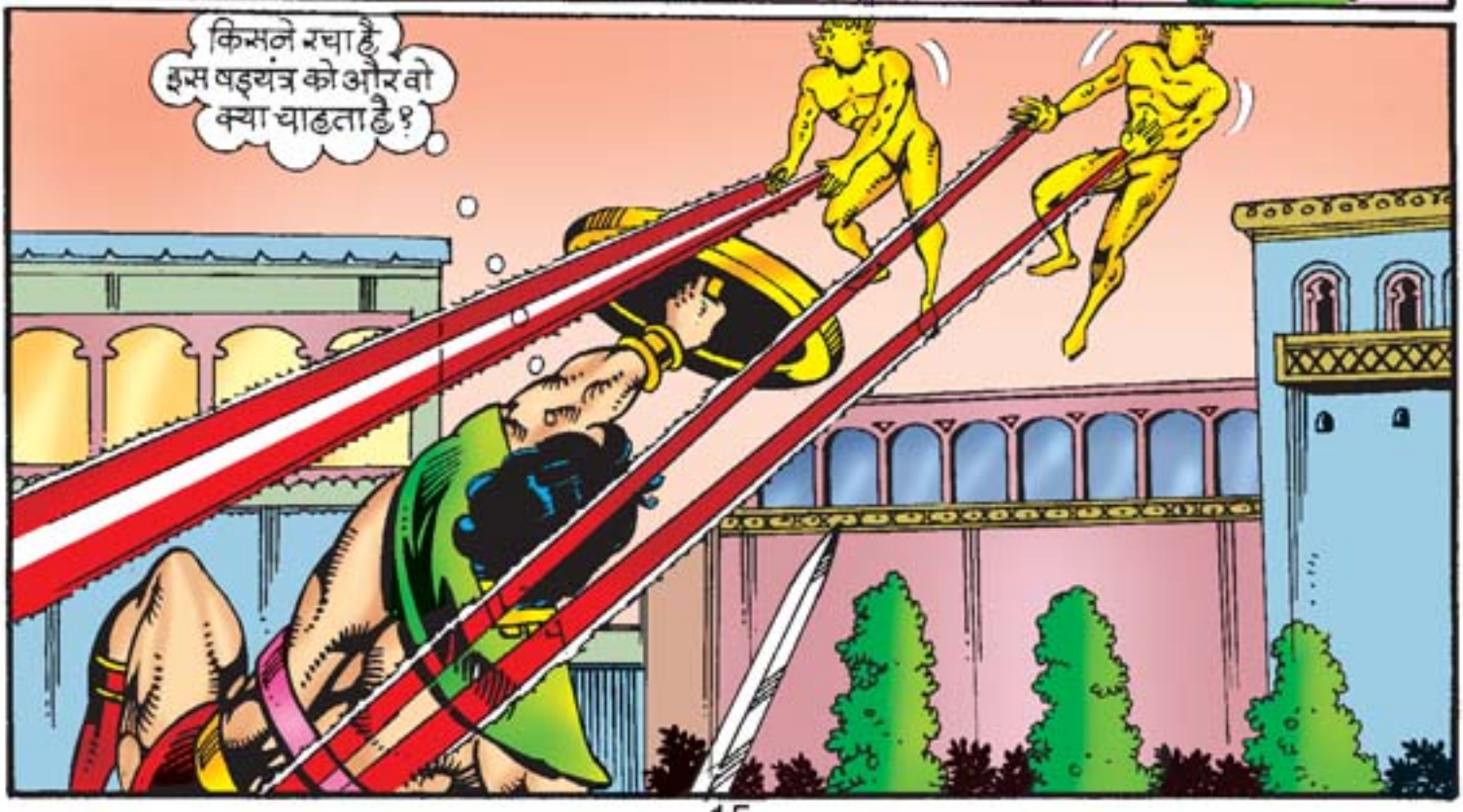
किसने रचा है इस षड्यंत्र को और वो क्या चाहता है ?

वह फुर्तीला था और वो जो चाहता था उसे पाने के बहुत ही करीब था-
भोकाल सूर्ययोद्धाओं से भिड़ा हुआ है लेकिन मुझे नहीं लगता कि सूर्ययोद्धा उसे अधिक देर तक रोक पाएंगे इसलिए अंकित को अपने कब्जे में करने के लिए मुझे जो करना है ...
...बहुत ही जल्दी करना है।
अरे, माताश्री आप! आप स्वयं मेरे लिए दूध लेकर आई हैं?
हां अंकित! बहुत दिनों से मैंने तुम्हें अपने हाथों से कुछ खिलाया-पिलाया नहीं।...
...इसलिए मैंने सोचा कि अपने लाडले को आज मैं अपने हाथ से दूध पिलाऊंगी। इसलिए मैं आ गई।
लो पियो।
अंकित ने खुशी के साथ अपनी मां के हाथों से दूध तो पीना शुरू किया।



कहानी 19 पेज से जारी

लेकिन दूध खत्म होने से पहले ही-
आहह!
धड़ाक
हा हा हा! अचेत होकर गिर गया राजकुमार अंकित लेकिन इसे गिरे नहीं रहना...
...इसे तो उठना है क्योंकि इसे मेरे लिए हासिल करना है...
...कछुआ कवच!
हा हा हा!
मैंने इसके मस्तिष्क पर कब्जा कर लिया है। अब यह मेरे इशारे पर नाचेगा और मुझे उन तिलिस्मी रूद्र तालों की तरफ ले जाएगा जहां कछुआ कवच रखा है।

अचानक पीछे से गूंजी वह आवाज कूचांग और उसके लक्ष्य के बीच में दीवार बनती चली गई –

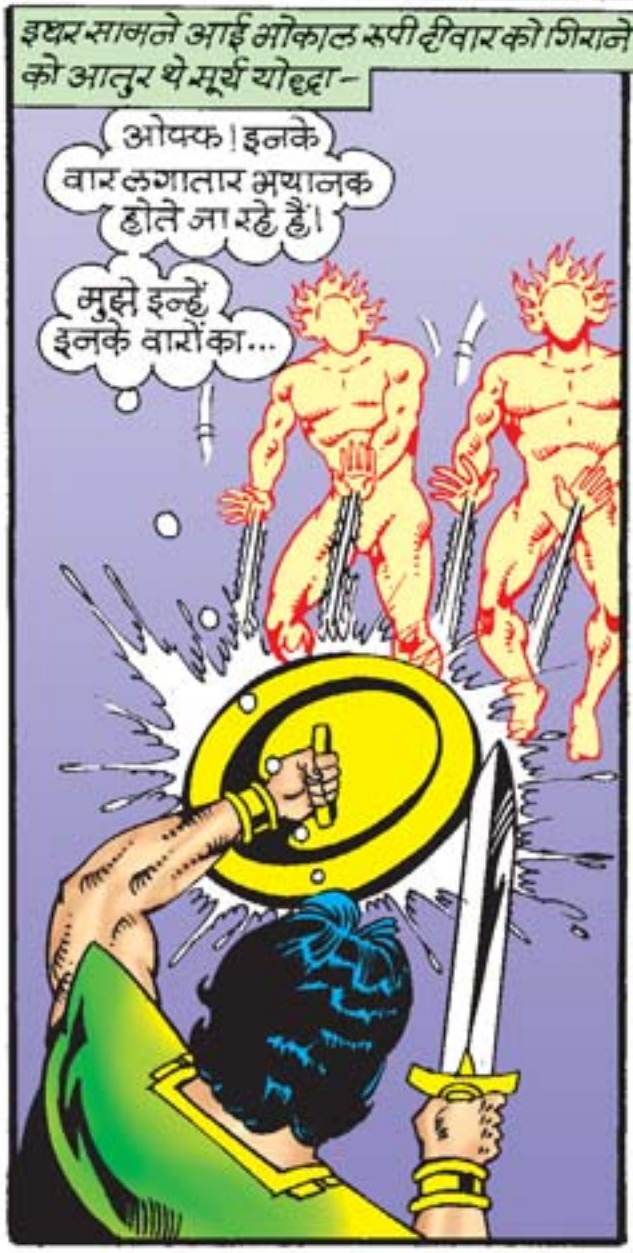

और इनकी सारी तलवारें मुझे काट डालने को आतुर...
खटाक

...हैं! ओह!
भोकाल ने खुद को सूर्य योद्धाओं की तलवारों से तो बचा लिया -

लेकिन उन छल्लों से नहीं बच पाया -
इन दहकते छल्लों ने मुझे पूरी तरह अपने में फंसा लिया है। और मैं इन्हें किसी भी तरह तोड़ नहीं पा रहा हूं। ना तलवार से...
...और ना ढाल से।
ढाल की सहायता से उड़कर भी बचना संभव नहीं क्योंकि ये छल्ले ऊपर से इतने संकरे हैं कि मेरा शरीर उनमें से बाहर नहीं निकल सकता।

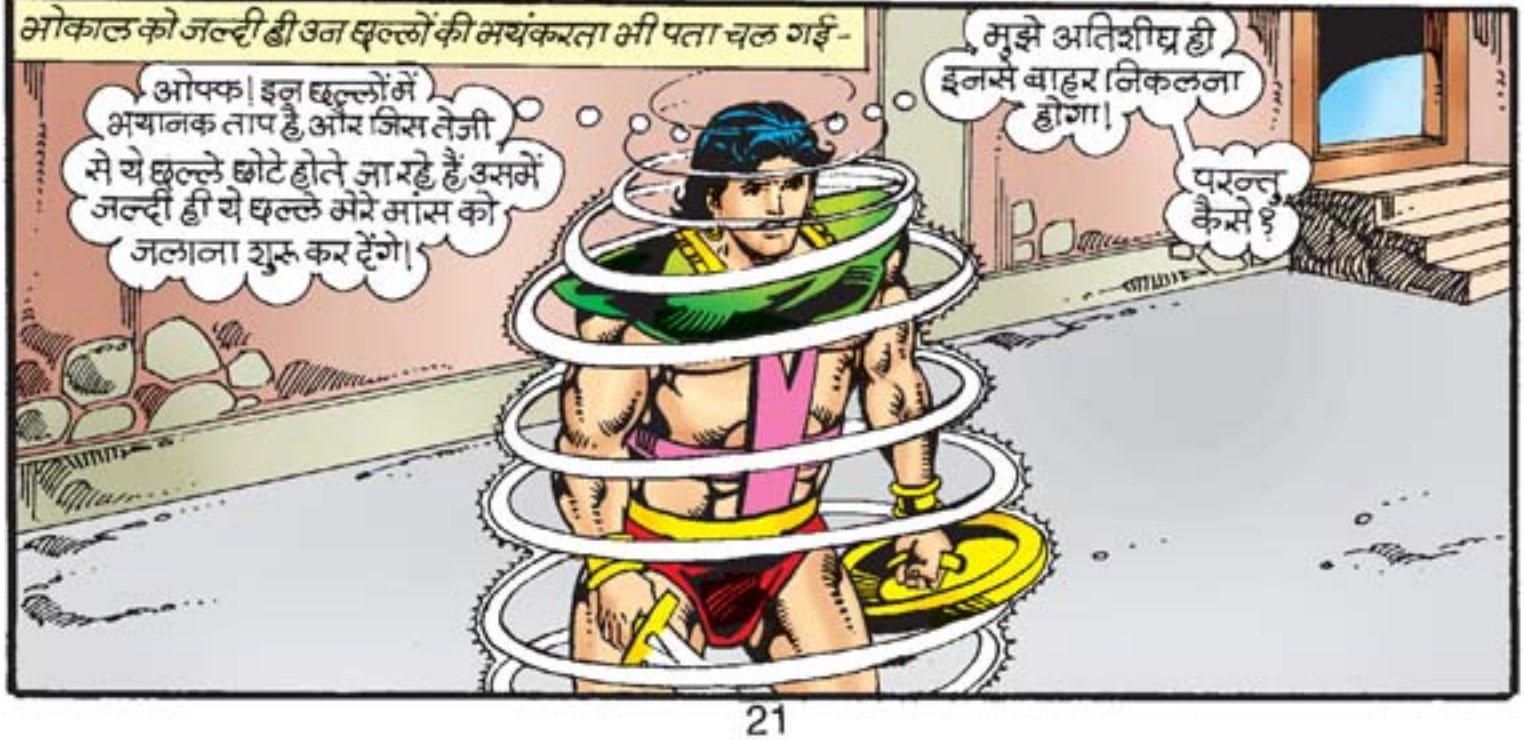
भोकाल को जल्दी ही उन छल्लों की भयंकरता भी पता चल गई -
ओफ्फ! इन छल्लों में भयानक ताप है और जिस तेजी से ये छल्ले छोटे होते जा रहे हैं उसमें जल्दी ही ये छल्ले मेरे मांस को जलाना शुरू कर देंगे।
मुझे अतिशीघ्र ही इनसे बाहर निकलना होगा!
परन्तु कैसे?

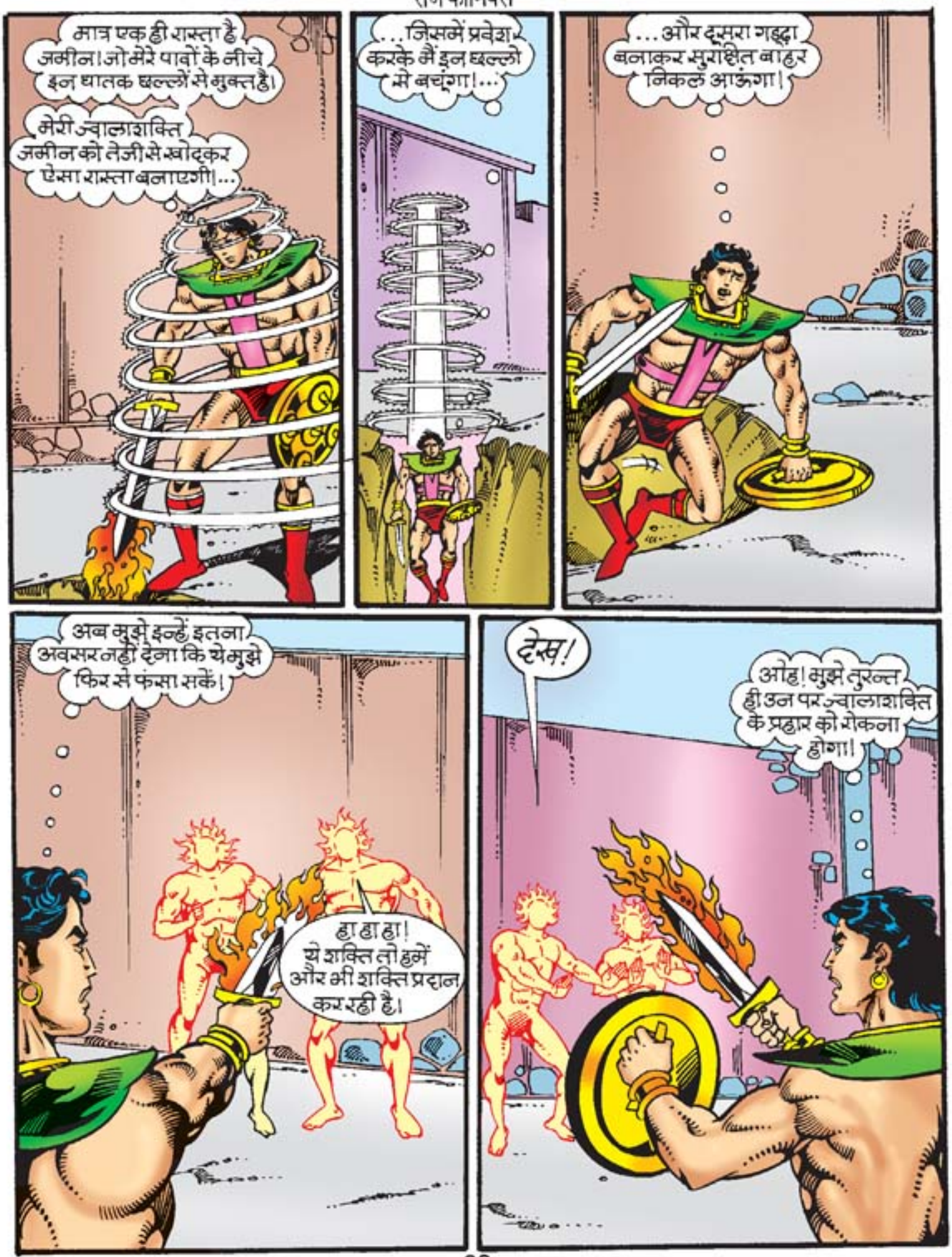
मात्र एक ही रास्ता है जमीन। जो मेरे पावों के नीचे इन घातक छल्लों से मुक्त है।
मेरी ज्वालाशक्ति जमीन को तेजी से खोदकर ऐसा रास्ता बनाएगी।...
...जिसमें प्रवेश करके मैं इन छल्लो से बचूंगा।...
...और दूसरा गड्ढा बनाकर सुरक्षित बाहर निकल आऊंगा।
अब मुझे इन्हें इतना अवसर नहीं देना कि ये मुझे फिर से फंसा सकें।
हा हा हा! ये शक्ति तो हमें और भी शक्ति प्रदान कर रही है।
देख!
ओह! मुझे तुरन्त ही उन पर ज्वालाशक्ति के प्रहार को रोकना होगा।

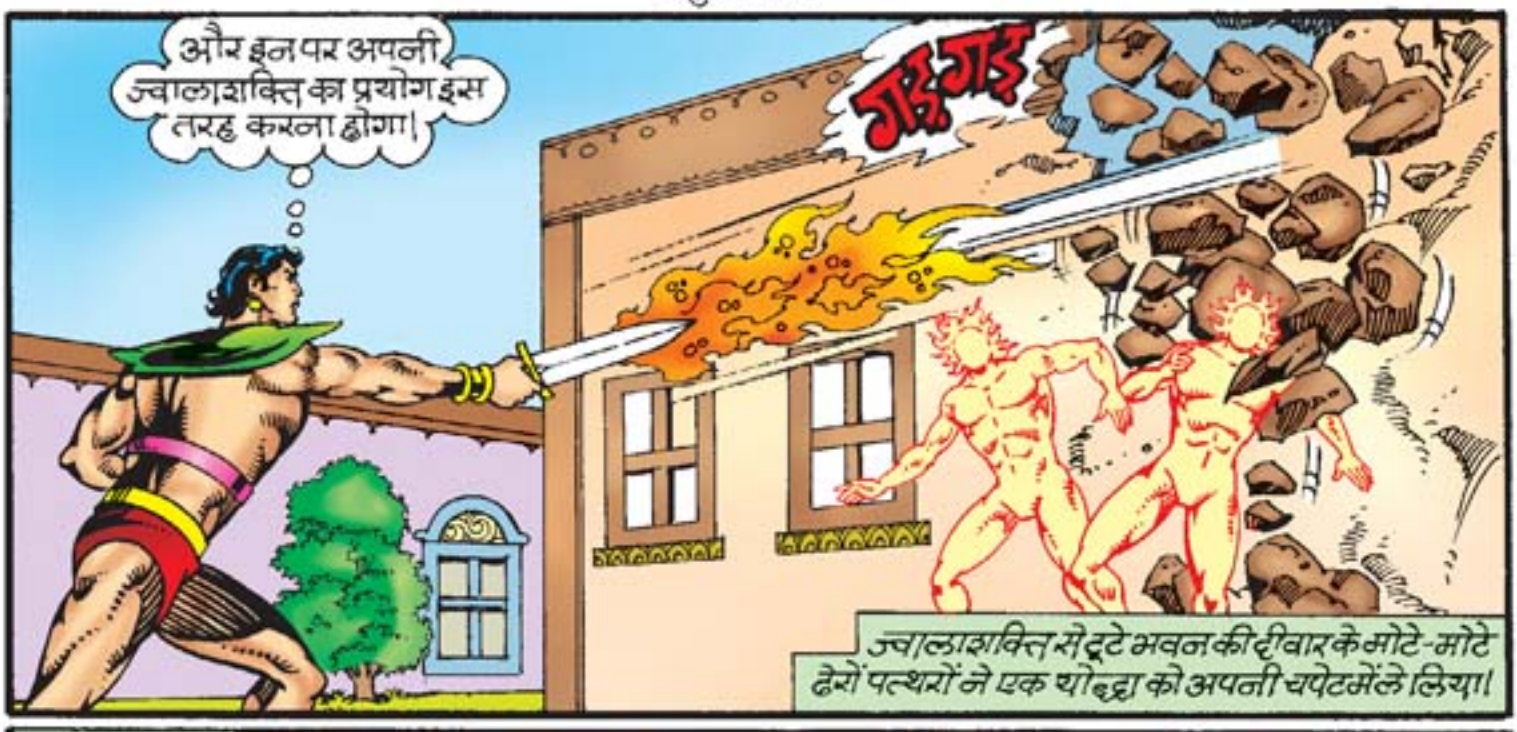
और इन पर अपनी ज्वालाशक्ति का प्रयोग इस तरह करना होगा।
गड़गड़
ज्वालाशक्ति से टूटे भवन की दीवार के मोटे-मोटे ढेरों पत्थरों ने एक योद्धा को अपनी चपेट में ले लिया।

जबकि दूसरा-
गड़गड़
सर्रर्रर्र
मुझे फंसाना बहुत कठिन है।

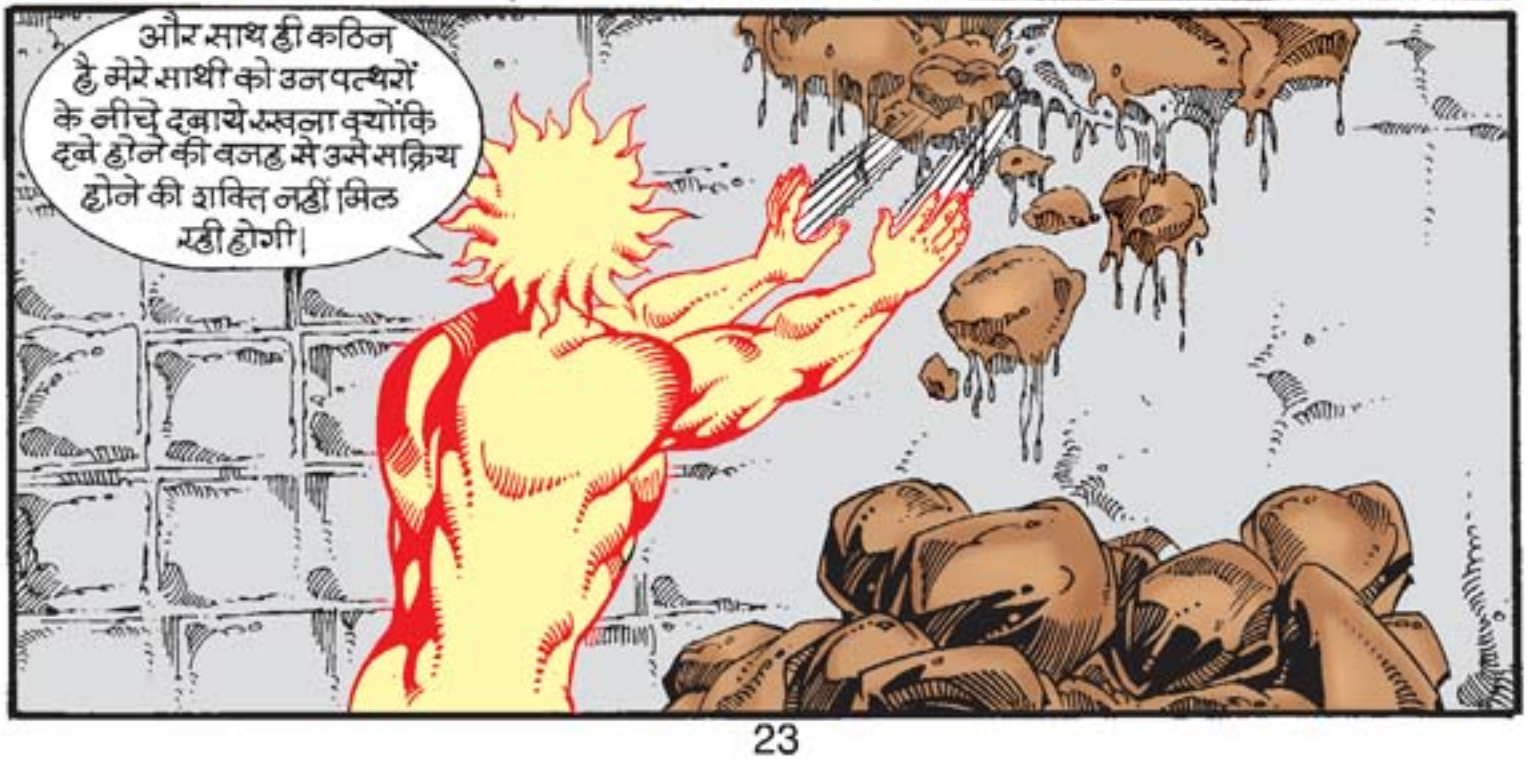
और साथ ही कठिन है मेरे साथी को उन पत्थरों के नीचे दबाये रखना क्योंकि दबे होने की वजह से उसे सक्रिय होने की शक्ति नहीं मिल रही होगी।

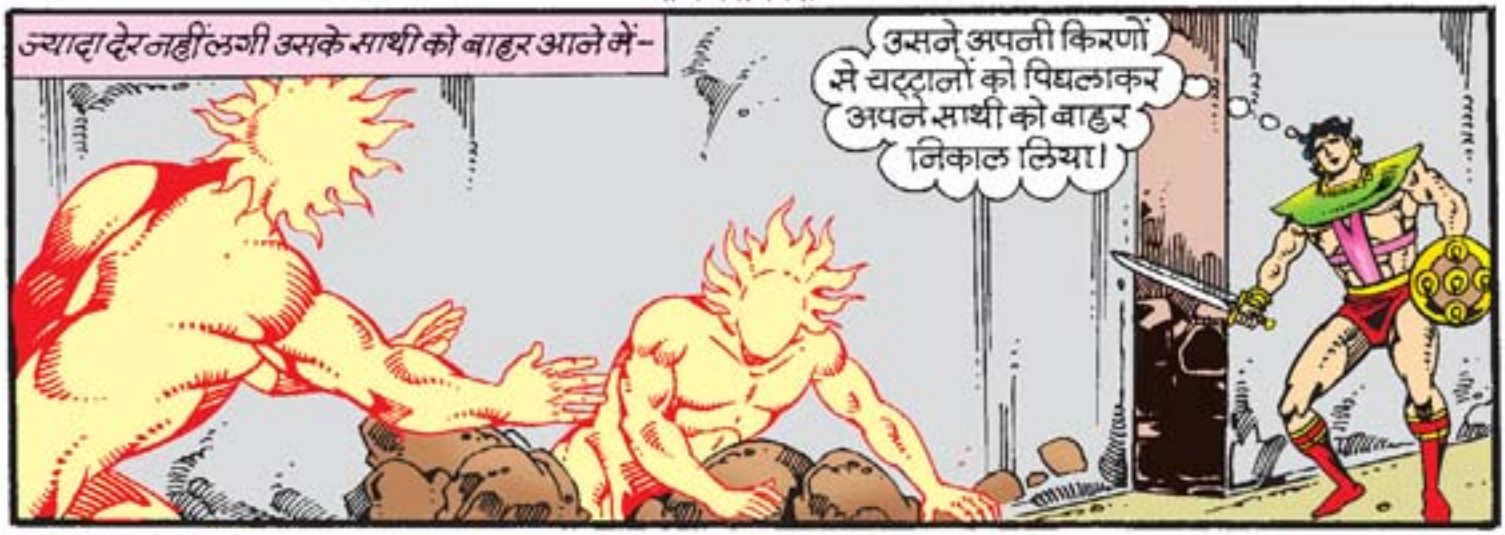
ज्यादा देर नहीं लगी उसके साथी को बाहर आने में-
उसने अपनी किरणों से चट्टानों को पिघलाकर अपने साथी को बाहर निकाल लिया।

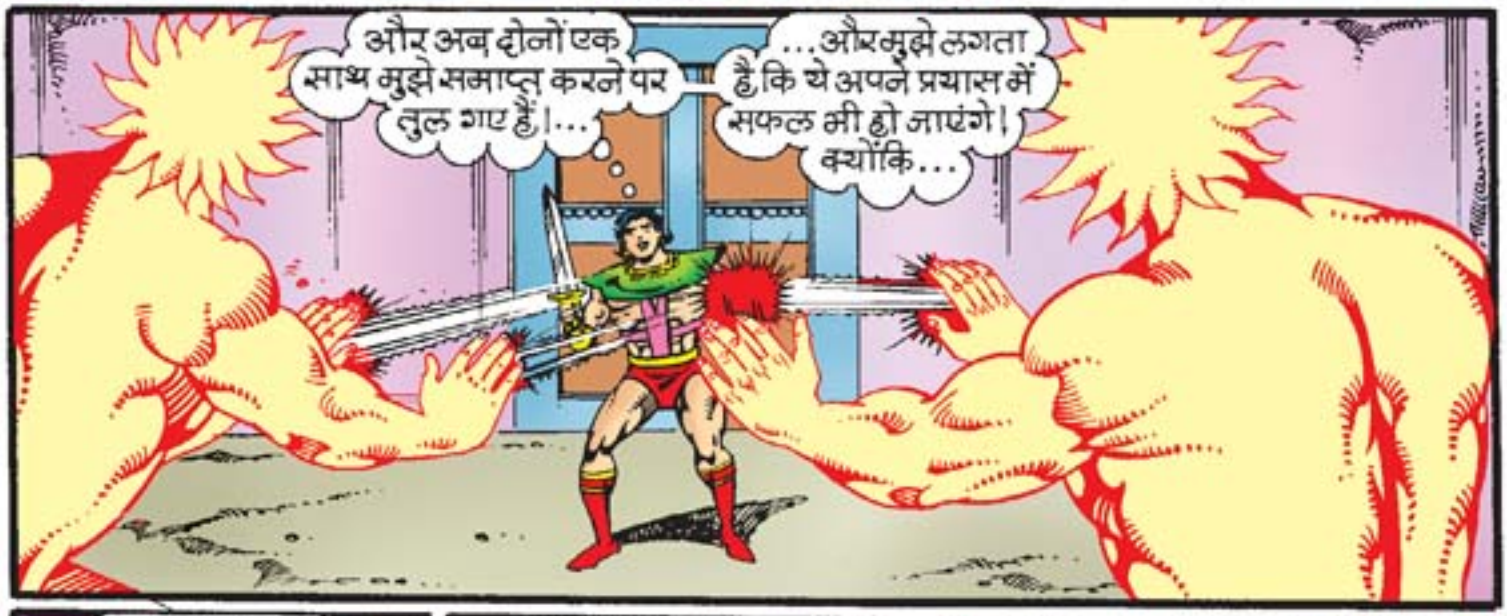
और अब दोनों एक साथ मुझे समाप्त करने पर तुल गए हैं।...
...और मुझे लगता है कि ये अपने प्रयास में सफल भी हो जाएंगे। क्योंकि...

...मैं जिसके बल पर इन्हें समाप्त कर सकूं मुझे इनकी कोई भी कमजोरी समझ में नहीं आ...

...रही। आ रही है। शायद मुझे इनकी एक कमजोरी समझ में आ रही है।...
...और अगर मेरा समझना सही है तो...

...समझ लो मुझे इनसे छुटकारा भी मिल गया और...

...मैंने इन्हें समाप्त भी कर दिया।
अपनी ज्वालाशक्ति के प्रयोग से भोकाल ने धूल का बवण्डर ला दिया था...

...ऐसा बवण्डर जिसने सारे वातावरण को अपनी चपेट में ले लिया -
अब ठीक है, धूल के इस बवण्डर को पार करके सूर्य की किरणें यहां के वातावरण में नहीं पहुंच पा रही हैं।
मुझे इस धूल के बवण्डर को और भी बढ़ाकर इस स्थिति को तब तक बनाए रखना है...

...जब तक ये सूर्य योद्धा समाप्त नहीं हो जाते। और ऐसा शीघ्र ही होगा क्योंकि दोनों सूर्य योद्धाओं के शरीर शिथिल पड़ते जा रहे हैं।
बेहाल होते जा रहे सूर्य योद्धा।

जैसे ही बेजान हुए वैसे ही भोकाल के चेहरे पर विजयी मुस्कान खेल गई -
ये दोनों इसलिए सक्रिय थे क्योंकि इन्हें सूर्य की किरणों से सक्रिय रहने की उर्जा मिल रही थी। जैसे ही धूल के कारण सूर्य की किरणों ने इनके शरीर तक पहुंचना बंद किया वैसे ही ये बेजान हो गए।

अगर दूसरा सूर्यथोद्रा अपने साथी को पत्थरों के नीचे से निकालने को बेचैन ना हो उठता तो यह बात मेरी समझ में कभी नहीं आती।...
...वैसे अब मुझे इन्हें मिट्टी के ढेर के नीचे दबा देना चाहिए ताकि धूल छंटने के बाद जब सूर्य की किरणें फिर से यहां पहुंचे तो...

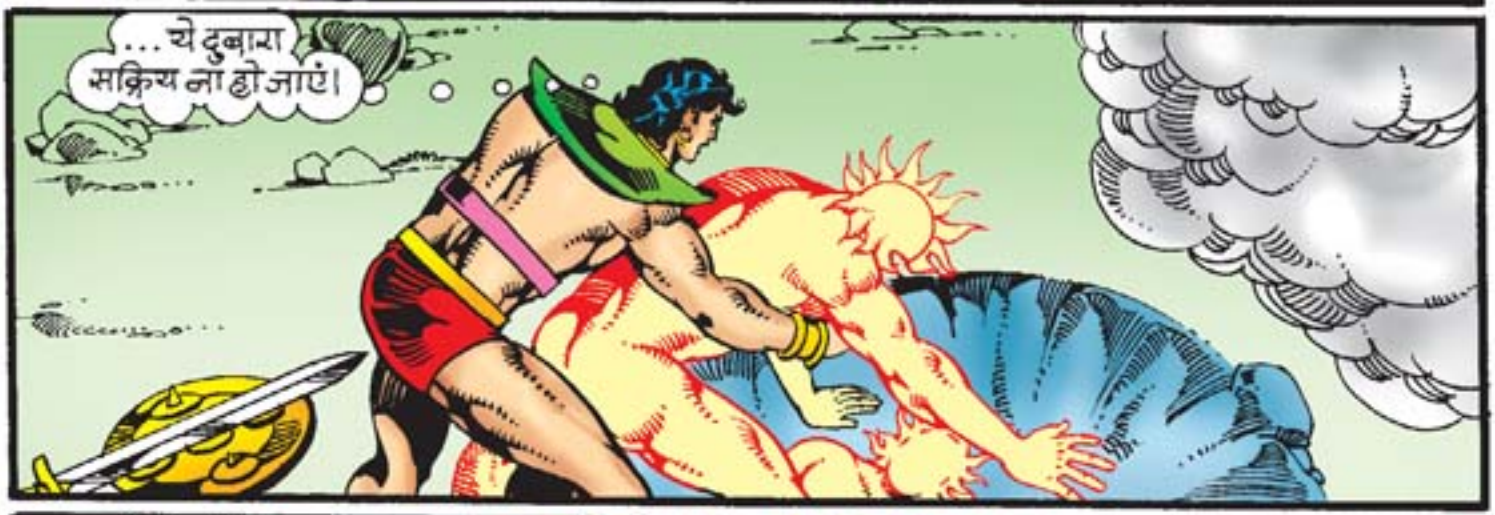
...ये दुबारा सक्रिय ना हो जाएं।

कौन है इन्हें भेजने वाला?...
...और वह मुझसे क्या चाहता है?

फूचांग जो आत्मा रूप में अंकित के शरीर में मौजूद आश्चर्य से सामने वहां देख रहा था।

जहां उसे रोकने के लिए श्वेता खड़ी हुई थी।

त... तुम! म... मेरा मतलब है श्वेता तुम! तुम मुझे रोकने आई हो?

हां, क्योंकि तुम उस रूद्रताले की तरफ बढ़ रहे हो जहां राज्य की सबसे बड़ी धरोहर रखी है।

तुम कछुआ कवच की बात कर रही हो ना। माना वह राज्य की धरोहर है परन्तु वह कवच बना किसके लिए है। मेरे लिए ही ना।...

...मैं रूद्रतालों को खोलकर उसे लेने जा रहा हूं।

...और तुम मुझे ऐसा करने से नहीं रोक सकती।

ओह, तुम्हें देखकर मेरे मन में जो शंका पनपी थी वह सही निकली। अंकित किसी भी दशा में मुझसे इतनी कठोरता से बात नहीं कर सकता।

तुम मेरे भाई अंकित नहीं हो सकते। तुम कोई बहुरूपिये हो। अंकित कहां है?
सरररर
बताओ। नहीं तो गर्दन धड़ से अलग कर ...
...दूंगी! ओहेह!
बहुत सतर्क हैं तेरी आंखें और बहुत चालाक है तू।
तू तो मेरे बहुत काम आएगी।
आहह
जैसे ही श्वेता के कंठ से चीख गूंजी-

वैसे ही उसके हलक से ठहाका गूंज उठा-
हा हा हा! अब ठीक है। अब यह खुद भी रूकेगी और दूसरों को भी मुझ तक पहुंचने से रोकेगी।
लेकिन मुझे नहीं लगता कि कोई दूसरा यहां कभी पहुंच पाएगा।
मैं रूद्र ताले की तरफ बढ़ रहा हूं। यह बात किसी को भी नहीं पता चलने वाली।
ऐसा नहीं था।
भोकाल को उस बात का पता चलने जा रहा था-
महारानी जी की यह दशा कैसे हुई?
पता नहीं महाबली! हमने तो महारानी जी को राजकुमार अंकित के कक्ष में अचेत पड़े देखा था। राजकुमार वहां कहीं नहीं थे इसलिए हम महारानी जी को यहां उठा लाए।
नहीं!
किसी ने राजकुमार जी को महल से बाहर जाते देखा?

राजधानी के एक क्षेत्र पर सूर्ययोद्धा अचानक आक्रमण कर देते हैं। मेरे उनसे निपटने के लिए जाते ही राजमहल में महारानी अचेत पाई जाती हैं और राजकुमार अंकित रहस्यमयी ढंग से गायब हो जाता है।
कहीं ऐसा तो नहीं महल में यही खेल खेलने के लिए मुझे महल से दूर किया गया...
...हो। ओह। ऐसा ही है। बिल्कुल ऐसा ही है। राजमहल में कोई षड्यंत्र पनप रहा है।
और निसंदेह ही उसका शिकार अंकित को बनाया जा रहा है।
सोचता हुआ तेजी से वहां से भागा भोकाल -
अंकित के कक्ष में ही आकर रुका -
अंकित यहां नहीं है। लेकिन मेरा हृदय कहता है कि यहां अवश्य ही ऐसा कुछ मिलेगा जिससे मुझे पता चल सकेगा कि...

...अंकित कहां है?
ओह!
फ़िऽऽऽ
अचानक ऊपर से गूंजी उस आवाज ने भोकाल का ध्यान अपनी तरफ खींचा-
और जैसे ही भोकाल ने आवाज की दिशा में देखा-
वैसे ही उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं-
इधर अंकित की आंखें भी आगे के रास्ते को बंद देखकर आश्चर्य से भरी हुई थीं-
इससे आगे आप नहीं बढ़ सकते। कृपया इस हस्तचिन्ह पर अपना हाथ रखकर अपनी पहचान बताइये।
मैं जानता हूं ये रास्ता सिर्फ अंकित और भोकाल की हस्तरेखाओं की पहचान करके ही खुलता है। उसके सिवा कोई अन्य उस हस्तचिन्ह पर हाथ रखते ही...
...भस्म हो जाएगा।
पहचान स्वीकार कर ली गई है, आप राजकुमार अंकित ही हैं...

कृपया आइये!
सर्रर्रर्र
रास्ता खुल गया!

इसीलिए तो इस रास्ते पर बढने के लिए मैंने अंकित को चुना!

अब मुझे कुछआ कवच प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता!
अंकित के शरीर में समाये फ्रचांग का सोचना सही था...

...जो उसे रोकने वाला था उसकी खुद की सांसें रुकने जा रही थी क्योंकि...
भड़ाकss

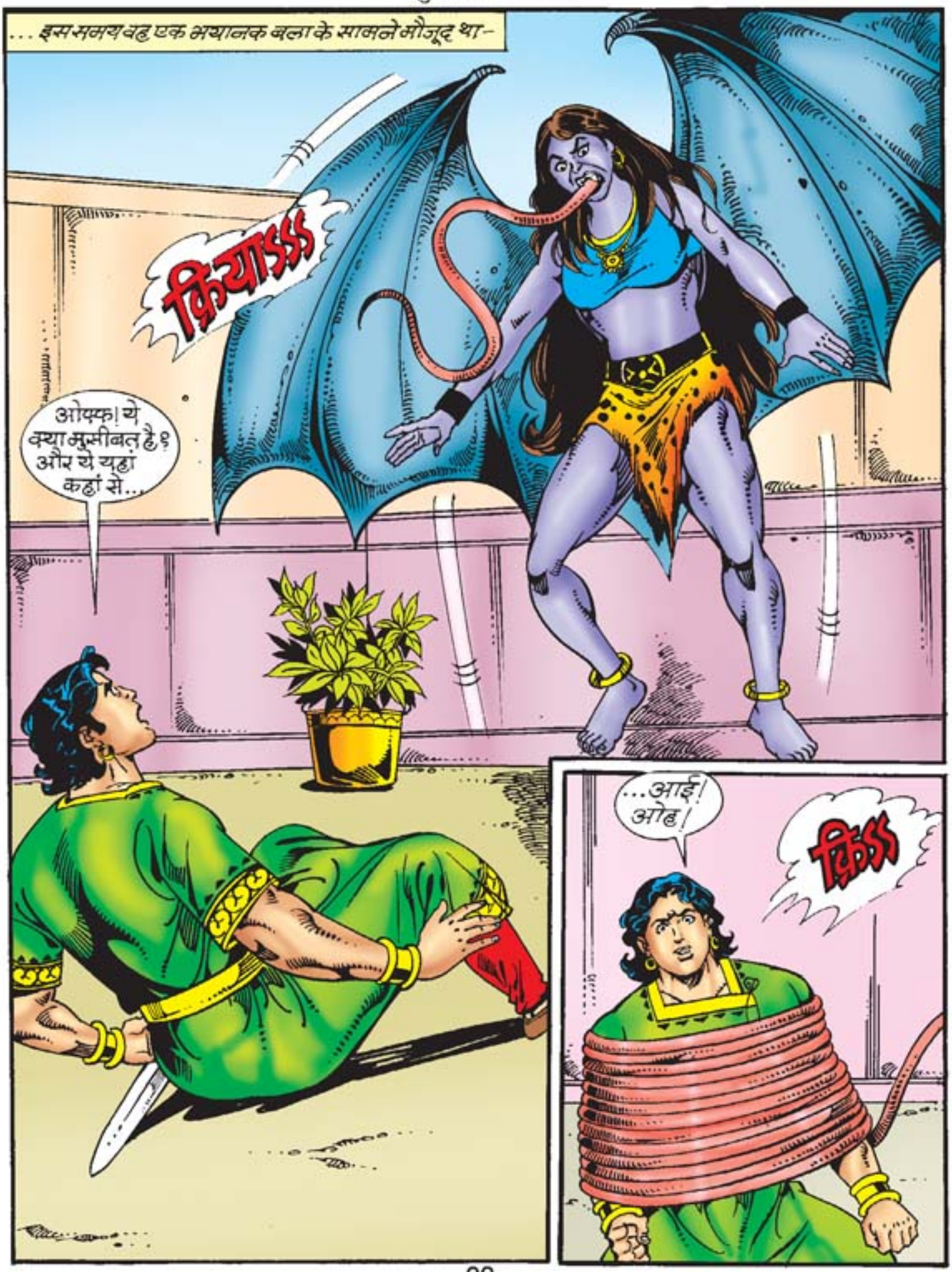
...इस समय वह एक भयानक बला के सामने मौजूद था-
फ़ियाऽऽऽ
ओफ्फ! ये क्या मुसीबत है? और ये यहां कहां से...
...आई! ओह!
फ़िऽऽ

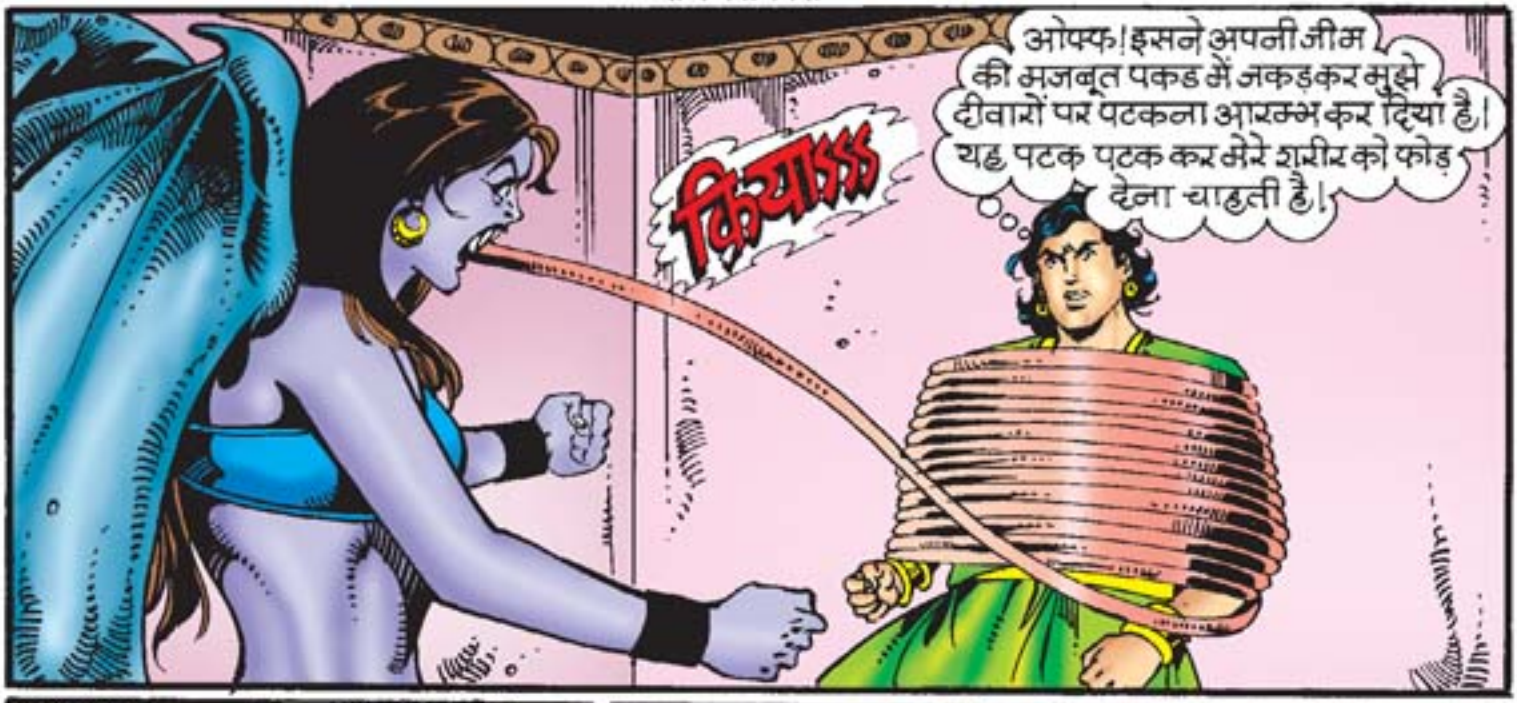
ओफ्फ! इसने अपनी जीभ की मजबूत पकड में जकड़कर मुझे दीवारों पर पटकना आरम्भ कर दिया है। यह पटक पटक कर मेरे शरीर को फोड़ देना चाहती है।
क्रियाऽऽऽ

...और मैं इससे मुक्त भी नहीं हो पा रहा हूं क्योंकि मैं जितनी छूटने के लिए ताकत लगा रहा हूं इसकी जीभ उतनी ही सिंचती जा रही है। अब तो इससे छूटने के लिए मुझे पुकारना ही होगा।

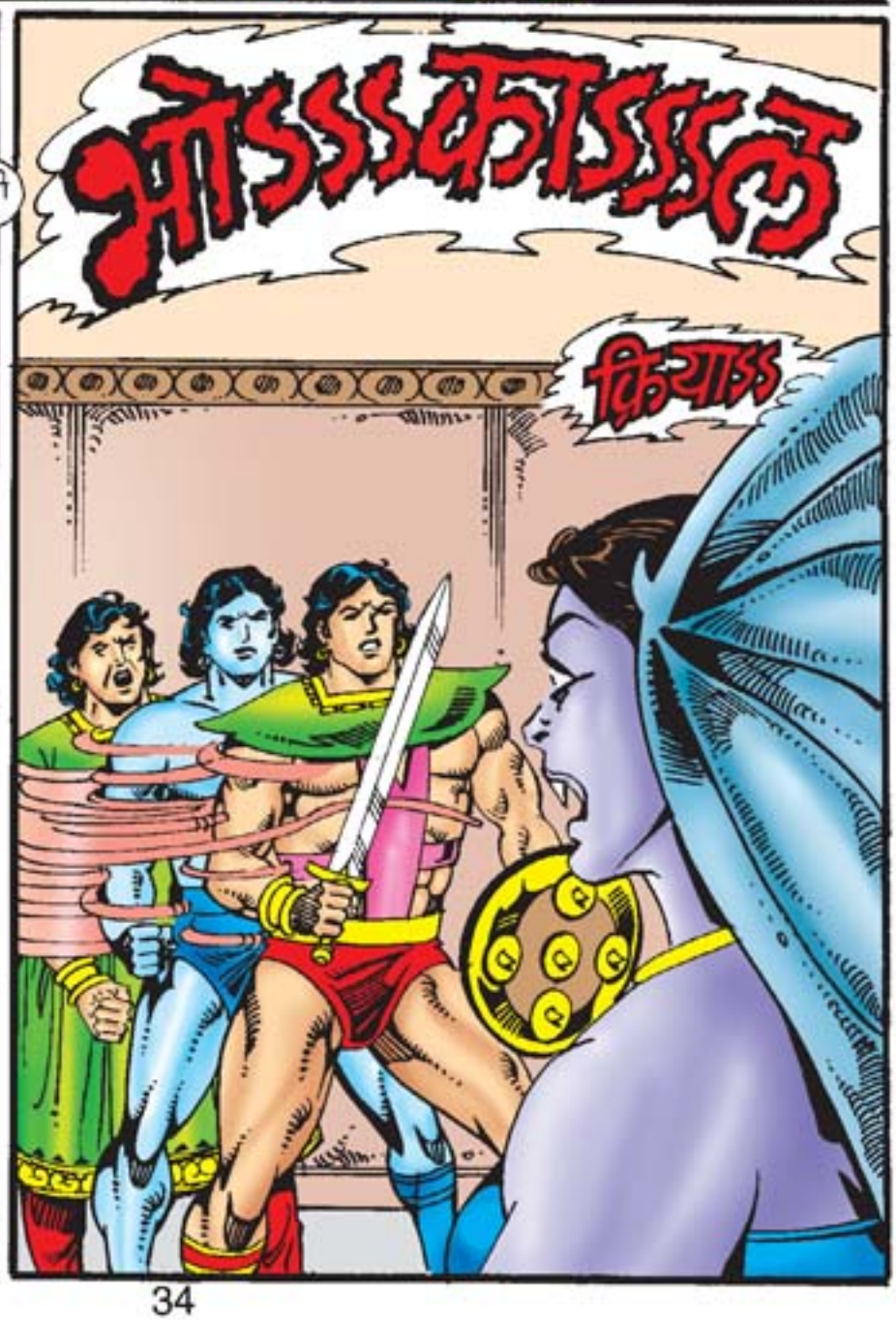
भोऽऽऽकाऽऽऽके
क्रियाऽऽ

फिंयाऽऽऽ
खटाच
अब छोड़ भोकाल परवार करना।
और भोकाल के वारों का स्वाद चख।
धाड़
लहू की बहुत प्यासी लग रही है तेरी जीभ...
खटाच
अभी इसे लहू का स्वाद चखाता हूं...
तेरे ही लहू का स्वाद।
उस मुसीबत के खून को पानी की तरह बहा देने के लिए चढ़ी भोकाल की तलवार –

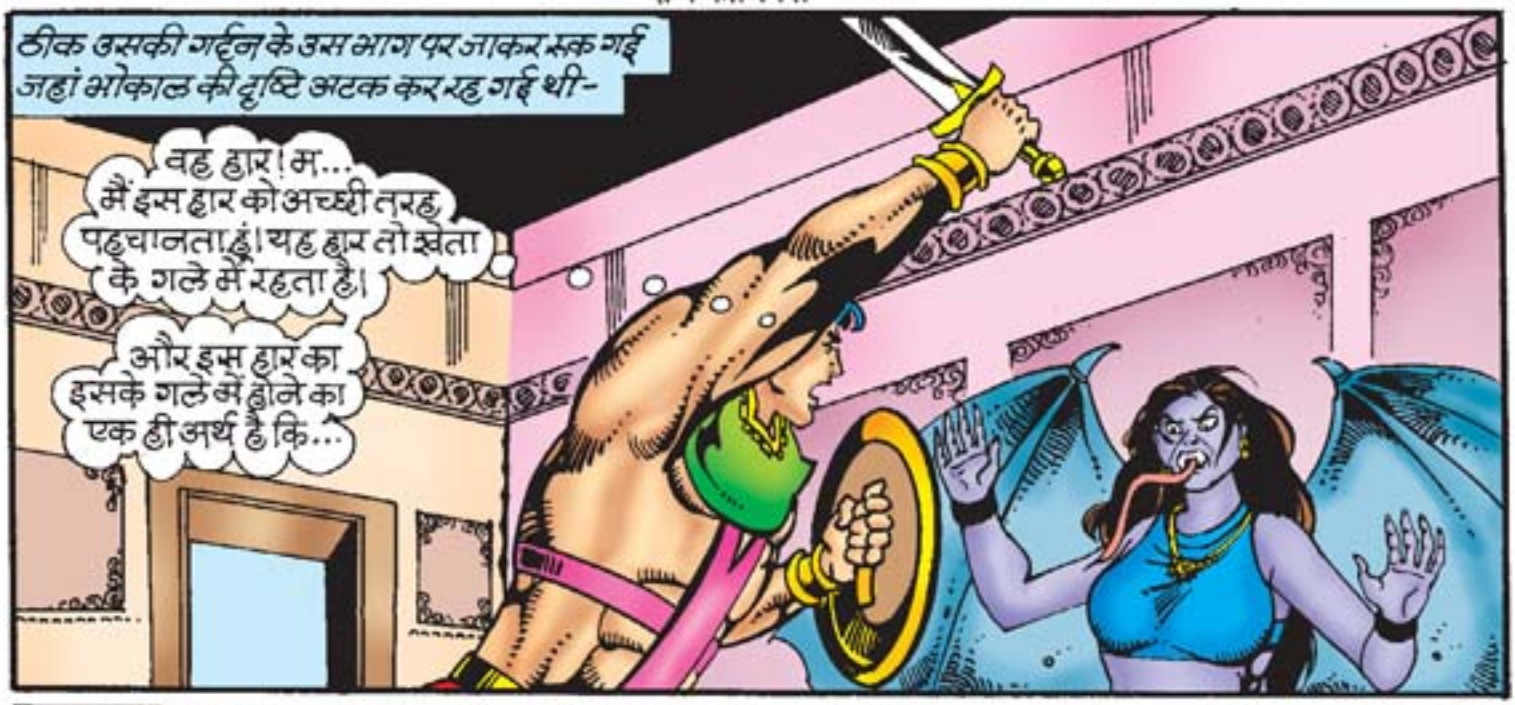
ठीक उसकी गर्दन के उस भाग पर जाकर रुक गई जहां भोकाल की दृष्टि अटक कर रह गई थी-
वह हार! म... मैं इस हार को अच्छी तरह पहचानता हूं। यह हार तो श्वेता के गले में रहता है।
और इस हार का इसके गले में होने का एक ही अर्थ है कि...

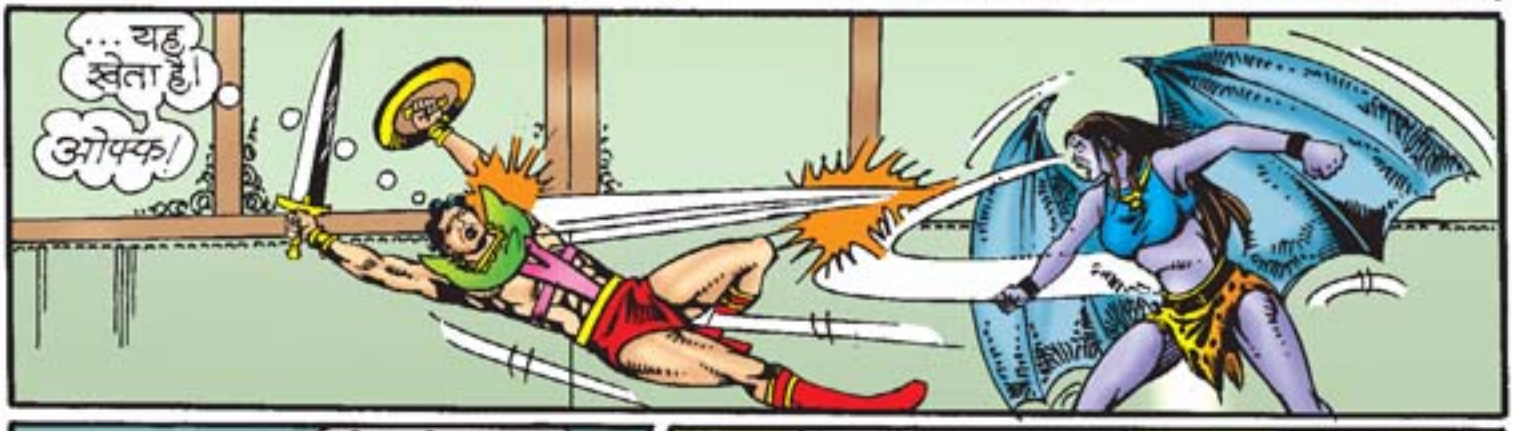
... यह श्वेता है।
ओफ्फ!

श्वेता को किसी ने अपनी शैतानी शक्तियों से भयानक रूप दे दिया है। महागुरु की कृपा से मैं यह बात उसका लहू बहाने से पहले जान गया। अगर मैं बाद में यह जानता तो स्वयं को कभी क्षमा नहीं कर पाता।

अब चूंकि मैं इस पर वार नहीं कर सकता इसलिए अब प्रश्न यह उठता है कि कैसे तो मैं इसके वारों से बचूं और...
... कैसे इसे सामान्य करूं?

एक क्षण! इसके शरीर में घंसा यह पंजा शायद मेरे प्रश्नों का उत्तर है। यही श्वेता को शैतानी मुसीबत का रूप प्रदान किये हुए है।...
मुझे इस पंजे को श्वेता के शरीर से अलग करना...

...होगा/ओह!
...यह तो मुझे अपने पास भी नहीं फटकने दे रही।
...ऐसे में अब इस तक पहुंचने का मेरे पास एक ही रास्ता बचता है...
सड़ाक

...कि मैं इसकी खिंचने वाली जीभ का बंदी बन जाऊं... और...

...इसे अपनी पूरी शक्ति से पीछे की तरफ खींचू और जब ये पूरी तरह खिंच जाए तो...

...मैं अपने शरीर को ढीला छोड़ दूं।...
...इस तरह मेरा शरीर कमान से निकले बाण की तरफ इसकी तरफ बढ़ेगा...

... और मेरा इस तक पहुंचने का उद्देश्य सफल हो जाएगा!
अपने इस उद्देश्य के साथ ही...
...भोकाल उस शैतानी पंजें को भी खींच लेने में सफल हुआ...
...जिसकी शैतानी शक्तियां भयानक मुसीबत का रूप लिये हुए थी-
...भोली-भाली श्वेता को-
चाचा जी!
श्वेता!
श्वेता एक ही सांस में भोकाल को सारी स्थिति से अवगत कराती चली गई-
अंकित बहुत बड़े संकट में है, चाचाजी! दुष्ट फ्चांग की आत्मा ने उसके शरीर पर कब्जा कर रखा है और वह उसकी सहायता से कछुआ कवच प्राप्त करना चाहता है!
ओह तो यह सब शैतान फ्चांग का किया-धरा है!

मैं उसे कछुआ कवच कभी प्राप्त नहीं करने दूंगा।
आप उधर किधर चले चाचा जी! कछुआ कवच जिन रूद्रतालों की सुरक्षा में रखा हुआ है उन तक पहुंचने का रास्ता तो इधर है।

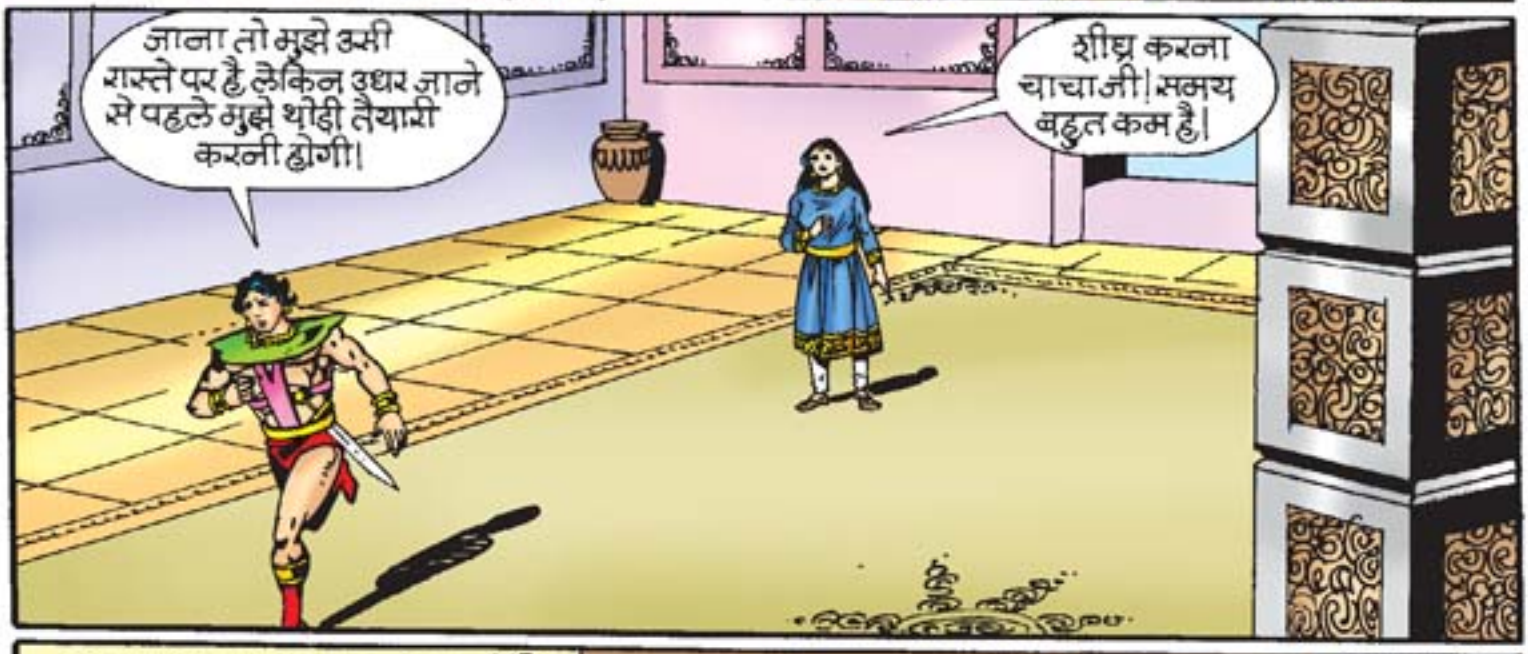
जाना तो मुझे उसी रास्ते पर है लेकिन उधर जाने से पहले मुझे थोड़ी तैयारी करनी होगी।
शीघ्र करना चाचाजी! समय बहुत कम है।

...सचमुच समय बहुत कम था क्योंकि...
...फूचांग कछुआ कवच के बहुत पास पहुंच चुका था–
यही है वो रूद्रताले जिन्हें तोड़ने के बाद कछुआ कवच मेरे सामने होगा। और फिर मैं कछुआ कवच का मालिक होऊंगा।
इतना आसान नहीं है तुम्हारा कछुआ कवच का मालिक बनना...

...रूद्रताल के होते हुए।
ओह!
तुम मुझे कछुआ कवच प्राप्त करने से नहीं रोक सकते। मैं राजकुमार अंकित हूं। कछुआ कवच का वास्तविक स्वामी!
ऐसा नहीं है रूद्रताल ने तुम्हें पहचान लिया है। तुम्हारा शरीर राजकुमार अंकित का अवश्य है परन्तु...
...आत्मिक रूप से तुम कोई शैतानी शक्ति हो।

...और कोई भी शैतानी शक्ति मेरे होते कछुआ कवच तक नहीं पहुंच सकती!
ओह! मुझे बंदी बनाने के लिए तूने असंख्य ताले उगल डाले!
लेकिन ना ये मेरी शैतानी शक्तियों का मुकाबला कर पाएंगे और...
...ना तू!

देख!
हा हा हा!

टन्न
ओह!

रूद्रताल के टुकड़े!

यानी कछुआ कवच तक पहुंच ही गए!

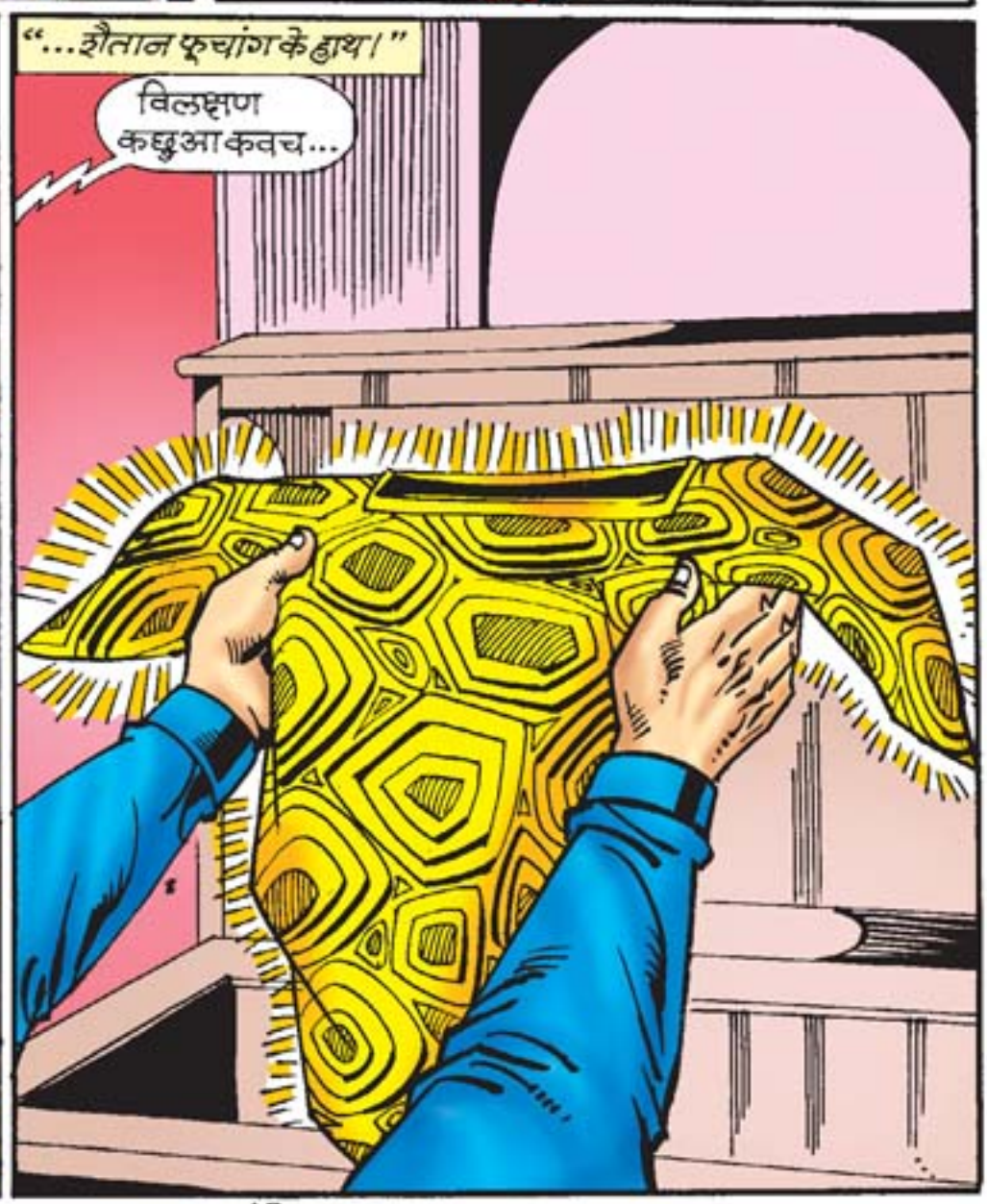
"...शैतान फूचांग के हाथ!"
विलक्षण कछुआ कवच...

...अब मेरा हुआ।
अब मुझे ब्रह्माण्ड की कोई भी शक्ति नहीं हरा सकती।
अब मैं इस कवच के बल पर अमर भी होऊंगा और सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज भी करूंगा।
अब मुझे अंकित के शरीर की कोई आवश्यकता नहीं।
मैं अब पंचतत्वों को इकट्ठा करके अपना शरीर प्राप्त करता हूं। हा हा हा।
अपनी सफलता पर इतना मत इतरा फूचांग!

...वो भी मात्र अपने हाथ में थमी साधारण वस्त्र की पोशाक के बल पर।
भोकाल! तो तू यहां आ ही पहुंचा लेकिन तूने पहुंचने में देर कर दी।

देख मैं कछुआ कवच को हासिल कर चुका हूं।
मैं तो देख ही रहा हूं फूचांग! लेकिन शायद तुझे नहीं दिखाई दे रहा कि कछुआ कवच वह नहीं है, जो तेरे हाथ में है बल्कि वो है जो...

...मेरे शरीर पर मौजूद है।
कछुआ कवच तेरे शरीर पर! ऐसा नहीं हो सकता।

ऐसा ही है। मैं जानता था तुझ जैसा कोई दुष्ट अपनी शैतानी शक्तियों का सहारा लेकर कछुआ कवच को पाने का प्रयास कर सकता है इसलिए मैंने उस कवच की हू-ब-हू नकल बना कर यहां रख दी थी। असली कवच को तो मैंने स्वयं अपने पास सुरक्षित रखा था...

और वो कवच ये है। ये।
ये झूठ है।
यही सत्य है और तू चाहे तो अपनी शक्तियों का प्रयोग करके इस सत्य को परास्त सकता है।
हां परास्त्रूंगा। अवश्य परास्त्रूंगा। क्योंकि झूठ के जिस जाल में तू मुझे फंसाना चाहता है मैं उसमें हरगिज नहीं...
...फसूंगा।
भड़ाक
हा हा हा। कुछ आ कवच के लिए ये बहुत छोटी शक्तियां है फूंक मारूंगा।
धड़ाक

इसकी असली परख के लिए तो अपनी बड़ी और घातक शक्तियों का उपयोग कर।
सही कहा तूने मुझे ऐसा ही करना चाहिए।
ये ले!

ये ले!
हा हा हा! आनन्द नहीं आया फुचांग।

तेरे पास कोई और घातक शक्ति है तो उसका प्रयोग कर और तब तक प्रयोग करता रह...

... जब तक तू यह नहीं मान जाता कि तेरे हाथ में जो कछुआ कवच थमा है वह नकली है और जो मेरे शरीर पर मौजूद है वह असली है।

फूचांग को मानना ही पड़ा–
कछुआ कवच के इतने पास पहुंचकर मैं उसे अपने हाथ से जाने नहीं दूंगा। ले मैंने फेंक दिया नकली कवच को। अब मैं तेरी गर्दन काटकर तेरे शव से कछुआ कवच...
...उतार लूंगा।
धाड़
ओह ये क्या?
तेरा सारा शरीर घावों से भरा हुआ है। तेरे शरीर पर मौजूद कवच की धज्जियां उड़ी हुई हैं।
ओह! कहीं इसका अर्थ यह तो नहीं कि... कि...आऊ।
सही सोचा तूने इसका अर्थ यही है कि मेरे शरीर पर जो कछुआ कवच था वह नकली था।
उसके मेरे शरीर पर रहते तेरा हर वार मुझ पर प्रभाव डाल रहा था लेकिन मैं अपनी सहन शक्ति के बल पर तेरे हर वार को हंसता-हंसता सह रहा था। तुझे यह विश्वास दिलाने के लिए कि मैंने असली कवच ही पहन रखा है।

"मैं यहां आने से पहले इसकी तैयारी करके आया था।"
"और साथ ही अपने मित्र टोटक से अक्षत टोटका साथ लाया था। जिसके प्रभाव से तुझे कोई भी वस्तु क्षतिग्रस्त होती नहीं दिखाई दे सकती थी। उसी की वजह से तुझे मेरा शरीर और कछुआ कवच क्षतिग्रस्त होता नहीं दिखाई दिया।"
अब वह टोटका समाप्त हो चुका है इसलिए तुझे सब दिखाई दे रहा है और ये सब असली कछुआ कवच को तेरे शिकंजे से छुड़ाने की मेरी चाल थी जिसमें अन्ततः मैं सफल हुआ। आहह।
सफल तो हो गया लेकिन घावों ने तुझे इतना कमजोर बना डाला है कि तू ज्यादा समय तक सफलता का स्वाद नहीं चख सकता।
इस दशा में तू मुझे असली कछुआ कवच पाने से नहीं रोक सकता।
अरे! कहां गया कछुआ कवच।
...मैंने तो उसे अभी यहीं फेंका था?
कछुआ कवच यहां है फ्चांग...

...मेरे शरीर पर।
अ... अंकित।
सही पहचाना फ्चांग!

अब अपने इस खेल को समाप्त कर क्योंकि तू जानता है कछुआ कवच पर ब्रह्माण्ड की किसी भी शक्ति का कोई प्रभाव...

...नहीं होता।
ओफ्फ! मैं हार चुका हूं।...
...ऐसे में मेरे पास बचने का एक ही उपाय है कि...

...मैं यहां से भाग खड़ा होऊं।
धड़ाक
अंकित के पास उसे रोकने का कोई तरीका नहीं था...

अब अंकित लड़खड़ाते भोकाल की तरफ पलटा-
भोकाल चाचा!
घायल भोकाल ने बड़ी मुश्किल से संभाले अपने पांवों को अब जमीन से उखड़ जाने दिया-

भोकाल को मालूम जो था कि अब उसे संभालने वाले अंकित के हाथ वहां मौजूद थे-
समाप्त